International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-02-2020; Accepted: 08-03-2020; Published: 09-04-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 55-57

काशीनाथ सिंह के कथा–साहित्य में यथार्थवाद

विनय शंकर
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत।

सारांश
काशीनाथ सिंह विविधतापूर्ण और वस्तुपरक कहानियों के लिए जाने जाते हैं रचना कर्म में उन्होंने निरंतर अपने यथार्थबोध को प्रखर बनाए रखा है। वे जुझारू व्यक्तित्व वाले कथाकार हैं और उनका संघर्ष ही उनकी कथाओं का रचनात्मक धरातल हुआ करता है। सामाजिक चिंताओं से युक्त उनकी कथाओं में एक अलहदा समझ है। शिल्प के प्रति एक उत्तरदायित्व है और एक सुस्पष्ट वैचारिक दृष्टि भी। ज़िंदगी के अनुभव को वे लेखन के लिए बेहद ज़रूरी मानते हैं। इसी से उनके कथा साहित्य में एक विश्वसनीय यथार्थ जन्म लेता है। कथाएँ केवल विचारों से नहीं बनती, वे बनती हैं 'समाज' के अनेक स्तरों पर फैली ज़िंदगी से जो किसी–न–किसी रूप में अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं।

मूल शब्द: यथार्थवाद, विविधतापूर्ण, काशीनाथ सिंह, वस्तुपरक

प्रस्तावना

काशीनाथ सिंह के कथा–साहित्य का जन्म और विकास समसामयिक जीवन की विकट परिस्थितियों के बीच हुआ है। उनके भीतर का कथाकार रचना के प्रति लगातार चिंतन–मनन करता रहता है, जिससे उनकी रचनाएँ यथार्थ बोध से लबरेज होकर अभिव्यक्त होती हैं। काशीनाथ सिंह तटस्थ एवं प्रतिबद्ध होकर कथा लेखन के माध्यम से साहित्य के विकास में योगदान करते हैं यथा उन्होंने हमेशा ही अपनी रचनाओं में आमजन की भाषा का प्रयोग किया तथा उसके संवेदनात्मक ज्ञान की भूमि के धरातल का विस्तार किया। काशीनाथ सिंह के कथा का माध्यम मानवीय सुख–दुःख के ऊपर ज्यादा केन्द्रित दिखाई देता है।

कथा के क्षेत्र में सन् 1960 से लेकर आज तक उनकी भावना का मूल सामाजिकता ही रही है। उन्होंने समयानुसार बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ही कथाओं का चित्रण तथा विश्लेषण किया है। सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाली उनकी प्रमुख कहानियों में 'सुख', 'आखरी रात', 'संकट', 'चाय घर में मृत्यु', 'कस्बा, जंगल और साहब की पत्नी', 'एक बूढ़े की कहानी', 'अपने लोग', 'दलदल', 'आदमी का आदमी', 'सुबह का डर', 'तीन काल कथा', 'हस्तक्षेप', 'सूचना', 'माननीय होम मिनिस्टर के नाम', 'मुसइचा', 'मीसाजातकम्', 'अधूरा आदमी', 'लाल किले बाज', 'सुधीर घोषाल', 'सदी का सबसे बड़ा आदमी', 'सिद्दीकी की सनक', 'मौज़ मस्ती के दिन', 'संतरा', 'वे तीन घर', 'वायस्कोप का लल्ला', 'एक लुप्त होती हुई नस्ल', 'अपना रास्ता लो बाबा', 'कहानी सराय मोहन की' और 'कविता की नई तारीख' आदि कहानियों का जिक्र प्रमुखता से किया जा सकता है। जिसमें उन्होंने सामाजिक यथार्थ को यथार्थपरक ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।

सातवें दशक के प्रारंभ में सन् 1961 में जब काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' प्रकाशित हुई, तो इसे प्रबुद्ध पाठकों, कहानीकारों, आलोचकों ने सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाली एक अलग तरह की कहानी माना। एक ऐसी कहानी जो विभिन्न दृष्टि बिंदुओं के धरातल पर पूर्ववर्ती तमाम कहानियों से अपनी अलग पहचान बनाती है। 'सुख' कहानी का यथार्थ कुछ इस तरह से है– काशीनाथ सिंह उस दौर में उन चीजों में 'सुख' तलाश रहे थे, जिसे काम–से–काम रखने वाला समाज समझ ही नहीं पाता। वे कहते हैं कि भौतिक साधनों के अलावा और भी कोई चीज 'सुख' प्रदान करने वाली हो सकती है। एक ऐसा पात्र जो सामूहिक सोच और सामाजिक चलन से अलग सोचते हुए भी सामाजिक होता है, लेकिन लोगों द्वारा अपनी संवेदना को न समझे जाने के कारण हँसी का पात्र बन जाता है। 'सुख' छोटी–छोटी अनुभूतियों की कहानी है। 'सुख' की भाषा कविता के एकदम नज़दीक पहुँची हुई–सी लगती है। छोटे–छोटे सुखों को आपस में न बाँट पाने एवं उसमें परिवार, समाज अन्य लोगों की भागीदारी नहीं होने से जो 'दुःख' उपजा है उसी की कहानी है– 'सुख'।[1]

भोला बाबू के जीवन की यह कितनी वड़ी विडंबना है कि वे अपनी दफ्तरी ज़िंदगी के दौरान प्रकृति के इन सामान्य दृश्यों को कभी देख नहीं पाये। ये इस बात की ओर इशारा करता है कि हम किस प्रकार खोखले सुखों की ओर भाग रहे हैं और असली और प्राकृतिक सुखों की निरंतर उपेक्षा कर रहे हैं। यही इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है। भोलाबाबू सेवानिवृत्ति के बाद जीवन के चौथेपन में जो महसूस कर पाए हैं, उन्हें यह लगता रहता है कि बाकी लोग शायद इसे जान रहे हैं, जबकि भौतिकतावादी दौर में नोन–तेल–लकड़ी जुटाने में बदहवास लोगों के पास इस तरह की अनुभूति के लिए कोई वक्त ही नहीं है। भोला बाबू जिस 'सुख' का अनुभव करते हैं। वह सबको बताना चाहते हैं, लेकिन कोई भी उनके 'सुख' को नहीं समझ पाता है। इसलिए भोलाबाबू को आज का सूर्यास्त देखने के बाद जो सुखानुभूति होती है, दरअसल वही उनके दुःख कारण बन जाता है और वे फूट–फूट कर रोने लगते हैं। 'सुख' कहानी मानवीय संवेदना की त्रासदी के यथार्थ को भोला बाबू के द्वारा दिखाने का सफल प्रयत्न है। 'सुख' यांत्रिकी के माहौल में बाजार बनती दुनिया में वस्तु बनते लोगों की मानवता की त्रासद कहानी है।

'आखिरी रात' काशीनाथ सिंह की सामाजिक परिवेश से उठाए गए दांपत्य जीवन के आर्थिक तनाव की कहानी है। इस कहानी में कथाकार ने पति–पत्नी के प्रेम तथा खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे दंपत्ति के बीच में आर्थिकता के कारण पैदा हुए तनाव को सामाजिक धरातल पर बखूबी चित्रित किया है। जब तक पत्नी की आर्थिक माँग सामने नहीं आती तब तक प्रेम बना रहता है और ज्योंही माँग सामने आती है कहासुनी शुरू हो जाती है जो प्रेम में दरार उत्पन्न कर देती है– अलगाव की हद तक।

काशीनाथ सिंह ने समाज के उन यथार्थ को उजागर किया है,

जो आज प्रायः हर दाम्पत्य जीवन के आर्थिक तनाव की कहानी है। यह एक ऐसा सामाजिक यथार्थ है, जिसमें आर्थिक कमी के कारण दाम्पत्य जीवन में खटास पड़ जाती है। जिस प्रेम और रोमांस में वह खोये होते हैं, उससे कहीं ज्यादा वे इस तनाव में रोये होते हैं। तभी तो कहानी का मुख्य पात्र कहता है, ''यदि यह प्रश्न कुछ समय के लिए टल गया होता जो मेरे भीतर जाने कब से उठ रही है तो मैं पत्नी को पूरी तरह प्यार कर सका होता। कुछ क्षण पहले की तरह और बीत गये होते। किन्तु नए सिरे से सोचता हूँ, तो लगता है कि हमारी रात का अन्त चाहे जब हुआ होता– जैसा होता वह कुछ इसी तरह रहा होता, बल्कि इससे बेहतर तो शायद न ही होता।''(2)

काशीनाथ सिंह ने 'संकट' कहानी के माध्यम से सेना में भर्ती राघो के छुट्टी में घर आने और पत्नी के उसी समय लड़के को जन्म देने के द्वंद को दर्शाया है। राघो सेना में थे और सेना में एक साल में एक बार ही छुट्टी मिलती है, तो वे सीधे घर आते हैं, लेकिन इस बार जिस रोज़ वे आए उनकी औरत सौरी में थी। राघो को बेटा हुआ था और वह आठवाँ दिन था। सारे गाँव में खुशी थी, लेकिन राघो आने के दूसरे दिन चुप।

'संकट' कहानी में काशीनाथ सिंह ने राघो के सामने उत्पन्न उस 'संकट' को दिखाने का प्रयत्न किया है, जिसे कोई नहीं समझ पाता। राघो घर में लड़ते–झगड़ते हैं, लोगों को बुरा भला तथा गालियाँ बकते हैं और दो–तीन दिन तक खाना भी नहीं खाते। यहाँ तक तो खैर ठीक था, लेकिन पत्नी के 'सौरी' से बाहर निकलने के बाद छिंकने पर उसे पीट दिया। एक बार नहीं, बल्कि दो तीन बार पीट दिया। पीटने का कारण पूछने पर कहता है– ''जो औरत मेरे सामने तीन बार छींक रही है, कल वही दूसरे के सामने कुछ भी कर सकती है।''(3)

यह ऐसा सवाल है, जिसका कोई जवाब नहीं था। राघो आखिरकार कहना क्या चाहता है, उसकी बात को कोई समझ न सका, लेकिन काशीनाथ ने 'संकट' कहानी के माध्यम से समाज के उस कटु यथार्थ को उजागर किया है, जिसमें व्यक्ति अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए मानसिक तनाव ले लेता है। लोगों के तथा अपनों के प्रति घृणा का भाव पैदा कर लेता है। राघो को न अपने बच्चे के पैदा होने की खुशी थी और न ही अपनी औरत के तकलीफ में होने पर कोई गम। उसे सिर्फ अपनी दैहिक चाहत की पूर्ति चाहिए होती है।

'चायघर में मृत्यु' कहानी में काशीनाथ सिंह ने 'क' के माध्यम से 'फूआ' की कहानी के द्वारा एक विधवा के जीवन के यथार्थ को उजागर किया है। 'क' एक डाकिया है, जो एक चायघर में बैठता है। एक विधवा जिसके बारे में लोग गलत ही सोचते हैं, लेकिन उनके उद्धार तथा उसके प्रति दुःख का भाव कोई प्रकट नहीं करता। यह आज के समाज का यथार्थ है, जो किसी विधवा के प्रति अच्छा विचार नहीं रखता और उसे गलत कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। विधवा की भी अपनी मर्यादा होती है। वह ऐसा कुछ नहीं करती, जिससे समाज में बदनामी हो। लेकिन जब वह बुढ़ापे में पहुँचती हैं, तो लोग उसके जल्द मरने की प्रार्थना करते हैं। कफन का इंतजाम करते हैं, रोते हैं। लेकिन फूआ को जब अपने खेत खलिहान की याद आती है, अपने दिन याद आते हैं। वह जीने की पुर्नइच्छा करने लगती है और इसी इच्छा का बोध कराते हुए सदा के लिए जीवन से विदा लेती है, लोगों के इस विचार के उलट की ''वे कुएँ में डूब मरेंगी या गले में फाँसी लगा लेंगी। यदि यह नहीं हुआ, तो नकटा की रात को नंगी होकर नाचेंगी। दिन दहाड़े अरहर के खेतों में घूमेंगी। दरवाजे पर खड़ी होकर वे मतलब मुस्कुराएँगी। लेकिन इस तरह का कुछ भी नहीं हुआ।''(4)

'कस्बा, जंगल और साहब की पत्नी' समाज में रह रहे उस गोठी–परिवार के दंपत्ति की कहानी है, जो साथ होते हुए भी एक दूसरे के साथ नहीं है। मिसेज़ गोठी चाहती है कि मिस्टर गोठी उन्हें प्रेम करें, उनके हाल चाल को पूछे, उन्हें घुमाने ले जाएँ लेकिन मिस्टर गोठी जंगल महकमे में अफसर हैं जो घर कम बाहर ज्यादा रहते हैं, जिसके कारण लोगों के बीच अफवाहें फैलती हैं, काशीनाथ सिंह ने इस कहानी में एक स्त्री कैसे अपने जीवन को सही तरह से जीने का प्रयत्न करती है तथा अपने और पति के बीच के संबंधों को बनाएँ रखने की भरसक कोशिश करती रहती है का यथार्थपरक चित्रण किया है। स्त्री किस तरह अपना परिवार बनाने में जुटी रहती है, लेकिन समाज और समाज के लोग तरह–तरह की बातें बनाते हैं। जिसका जबाब मिसेज गोठी यों देती हैं– ''जबकि एक औरत देखने में अच्छी हो, शरीर ह्रस्ट–पुष्ट हो, बात करना जानती हो, अख़बार भी पढ़ लेती हो, कोई कैसे छोड़ सकता है? और असल बात तो यह है कि कोई छाडे ना ही क्यों चाहेगा?''(5)

काशीनाथ सिंह ने 'एक बूढ़े की कहानी' के द्वारा समाज के उस यथार्थ को उजागर किया है, जो आज वर्तमान समय में हर व्यक्ति के रग–रग में बसा हुआ है। आज का व्यक्ति अपने दुःख से दुःखी नहीं है, बल्कि दूसरा व्यक्ति किस तरह सुख चैन की ज़िंदगी बिता रहा है, उससे दुःखी है। इसी प्रसंग में बूढ़ा आगे कहता है, ''क्यों किसी आदमी के दिखाई पड़ने के पहले से ही हम उसके खिलाफ तैयार रहते हैं? देखता हूँ अभी–अभी दो जने गले मिल रहे हैं और हँस रहे हैं तो छाती पर साँप लौटने लगता है। लेकिन फिर देखता हूँ कि उनमें से एक खड़ा और दूसरा जमीन पर पड़ा तड़प रहा है तो तबीयत बाग–बाग हो जाती है।''(6)

'दलदल' कहानी में काशीनाथ सिंह ने समाज़वादी यथार्थ को दिखाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। लेखक कहता है, जो चीज बहुत से लोगो के लिए मनोहर होती है। वही चीज दूसरे लोगों के लिए रोजी–रोटी होती है। वह उसका आनंद उस तरह नहीं लेते, जैसे और लोग लेते हैं। वह उनके लिए केवल उपयोग (जरूरत) भर होती है, ''और ये जंगल, नदी, पहाड़ और झरने! कौन नहीं जानता जो हमारे लिए नदी है, मल्लाह के लिए उसका खेत है, जो हमारे लिए बादल है, बाबू जी के लिए फसल या पत्थर है, जो हमारे लिए पहाड़ है, वहाँ के कुली के लिए रोटी है लेकिन हम यह जानते भर हैं।''(7)

काशीनाथ सिंह की कहानी 'आदमी का आदमी' में आदमी के आदमीपन की पड़ताल, उसे भीड़ के भीतर और भीड़ में रहते हुए भी सबसे अलग रखकर की गई है। 'आदमी का आदमी' कहानी का आदमी अपनी पत्नी के किसी दूसरे मर्द के साथ भाग जाने पर अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है, जिससे वह चौराहे पर खड़ा होकर भीड़ के खिलाफ हो जाता है। भीड़ में रहते हुऐ भी वह भीड़ की चरित्रहीनता को अपनाने में असमर्थ हो जाता है। इस रूप में वह भीड़ की चरित्रहीनता पर अपना गुस्सा जाहिर करता है, ''इन दोनों स्थितियों के बीच में ही कहीं उसके आदमी की स्थिति है लेकिन भीड़ हर तरफ मौजूद है और विशुद्ध आदमीपन को लेकर जीना असंभव हैं भीड़ उसे जीने नहीं दे सकती।''(8)

'आदमी का आदमी' कहानी में काशीनाथ सिंह ने आदमी के उस यथार्थ को दर्शाया है कि वह सभी के बीच होते हुए भी अपने आदमीपन को महसूस नहीं कर पाता। उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ने पर कोई उसके साथ नहीं होता। अगर साथ होता है, तो अपने स्वार्थ के लिए।

काशीनाथ सिंह ने 'काशी का अस्सी' उपन्यास में राजनीतिक यथार्थ और भ्रष्टाचार को यथार्थ ढंग से चित्रित किया है तथा उसमें समाज पर हावी होता भूमंडलीकरण का प्रभाव भी देखा जा सकता है। समय, मनुष्य और समाज का बदलाव मानवीय रिश्तों को ज्यादा प्रभावित कर रहा है। व्यक्ति किस प्रकार अपने मानसिक अंतर्द्वंद्व में पड़कर रिश्तों–संबंधों में खट्टास पैदा कर रहा है। यह सब आज की बढ़ती आधुनिक तकनीक, बाजारीकरण,

निजीकरण और उदारीकरण का प्रभाव है, जो मनुष्य–मनुष्य को नहीं समझ रहा है। इस अंधी दौड़ में वह मानवीय मूल्यों को भूल गया है। बाजारवाद का व्यक्ति के मन पर इतना प्रभाव है कि वह, जो चीज बाजार में खरीदने जाता है, वह न खरीद कर वह खरीदता है, जो उसे खरीदवाया जा रहा है। व्यक्ति की सोच अत्यधिक व्यक्तिवादी हो गई है। वह रिश्तों से ज्यादा अपने स्वार्थ एवं हितों पर ध्यान दे रहा है। स्वाभाविक ही है कि इससे मानव के जीवन में कृत्रिमता आएगी, जिसका प्रभाव उसके आपसी संबंधों पर दिखाई पड़ेगा। काशीनाथ सिंह ने उपन्यास 'काशी का अस्सी' में दर्शाया है–

''दुनिया बहुत तेजी से बदल रही थी और यह बदलाव सिर दर्द हो रहा था गुरूओं के लिए। बड़े तो समझ से काम लेते लेकिन छोटे वे मांगते जो टी.वी. में देखते और मांगते पहले अपनी मां से फिर बाप से। बाप दो लप्पड़ लगाता और ठेलता बाबा के पास 'जा बुढ़ऊ के यहाँ'। बड़ा माल दबाकर बैठा है बुडढा।''(9)

काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' अपने कथानायक के माध्यम से जीवन की कई परतों को खोलने का प्रयत्न करते है। उनकी किस्सागोई में एक खिलंदड़पन है, जो मानवीय त्रासदी का प्रयास उपन्यास के कथ्य को एक विस्तार देता है। यह विस्तार उत्तर–प्रदेश के एक गाँव से लेकर शहर बनारस और दिल्ली से होते हुए अमेरिका तक है। यह वो अमेरिका नहीं है, जो भूगोल में स्थित है, बल्कि किसी के लिए एक ब्रेनवॉश है और अन्य के लिए एक ऐसा मानसिक दबाव, जिसकी टीस भारत के पढ़े–लिखे मध्यवर्ग की बुजुर्ग पीढ़ी को बेचैन करती है। कभी मुक्तिबोध की कहानी 'क्लाइड ईथरली' का एक पात्र कहता है, ''भारत के हर बड़े नगर में एक–एक अमरीका है। अब तो यह अमेरिका गाँवों तक पहुँच गया है। उसका आक्रमण केवल अफगानिस्तान और ईराक पर नहीं है। वह हमारी नई–पीढ़ी की मानसिकता पर भी जिसका असर हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण ईकाई परिवार को तोड़ रहा है।''(10)

उनका उपन्यास 'महुआ चरित' मध्यवर्गीय समाज की नारी महुआ के चरित का विशिष्ट कथा–रस के साथ वर्णन किया है। इस उपन्यास में एक युवती और उसकी देहाशक्ति और इच्छाओं की परिणति उसके अस्तित्वबोध में होती दिखायी गई है। महुआ का यौवन खुद उसके द्वारा बिगाड़ा गया यौवन है। वह चाहकर भी, जानकर भी अपने कैरियर के कारण अपनी देहाशक्ति और आंतरिक चेतना को जुटा नहीं पाती है। दूसरी तरफ वह अपने स्वतंत्रता सेनानी, धर्मनिरपेक्ष पिता के द्वारा उसकी तरफ कोई ध्यान न देना। महुआ अपने पिता के बारे में सोचते हुए कहती है, ''सारी ज़िंदगी तुम देश और दुनिया के बारे में ही सोचते रहे कभी अपनी बेटी के बारे में भी सोचा? तुम्हें तो यह तक पता नहीं तुम्हारी बेटी की उम्र क्या है? उन्तीस या तीस, तुम जिन सहेलियों के बारे में पूछते हो, उनमें कितनी माएँ बन चुकी हैं और कितनी पेट से हैं? तुम यह भी जानते हो कि न दहेज दे सकते हो, न मैं वैसी शादी कर सकती हूँ। फिर तुम खुल कर क्यों नहीं कहते कि बेटी, तुम्हें जो करना है करो। हम साथ हैं तुम्हारे।''(11)

इस बात से महुआ की मध्यवर्गीय जीवन–स्थिति के साथ उसकी मनोदशा का संकेत मिल जाता है। पढ़ाई खत्म होने के बाद उसका अकेलापन अधिक गहराता है। अपनी सहेलियों के मदभरे दैहिक प्रसंग सुनकर उसका अकेलापन और अधिक गाढ़ा होने लगता है। उसकी सहेलियों में से कोई नहीं सोचती कि इन्हें सुनकर मुझ पर कैसी गुजरती होगी। तीस उन्तीस साल की महुआ का निर्वस्त्र अपने शरीर को निरखना किसी मनोवैज्ञानिक समस्या का परिणाम नहीं, बल्कि उस भौतिक स्थिति की देन है, जिसमें उसका अस्तित्व बँधा हुआ है। उसकी विवशता भी दोहरी है। एक का संबंध उसके शरीर से है, दूसरे का संबंध परिवार से, उसका ''शरीर गमले में पड़े गुलाब के उस पौधे की तरह हो गया है जिसे तुरन्त पानी न मिला तो सूखते देर न लगेगी।''(12) 'महुआचरित' को 'वृत्तांत का अंत' करती रचना के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। उपन्यास स्त्री की इच्छाओं का ऐसा दस्तावेज है, जिसमें समस्त नारी की चेतना को उजागर किया गया है।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि कथाकार काशीनाथ सिंह के कथा–साहित्य में यथार्थ का जितना प्रखर और स्पष्ट रूप देखने को मिलता है, उतना किसी अन्य में नहीं। हिंदी कथा–साहित्य में यथार्थवाद के जन्मदाता तो प्रेमचंद हैं, लेकिन प्रेमचंद के बाद जो धाराएँ सामने आईं उन्हें आलोचकों ने मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी तथा समाजवादी यथार्थवादी कहा। स्वतंत्रता के बाद जब नई कहानी आंदोलन सामने आया, तो उसमें पूर्ववर्ती दोनों धाराओं के प्रति उदासीनता का भाव प्रकट किया गया था, लेकिन परिवेश की प्रामाणिकता पर विशेष बल दिया गया था। इस प्रकार हम नई कहानी के यथार्थ को 'परिवेशगत यथार्थ' का नाम दे सकते हैं। आगे चलकर, साठोत्तरी हिंदी कहानी के पश्चात् कहानियों में न व्यक्ति को, न समाज को, और न ही परिवेश को विशेष महत्त्व का समझा गया। केवल 'व्यक्ति' को ही केन्द्र में रखा गया है। यद्यपि समकालीन हिंदी कथा–साहित्य को हम मानव यथार्थ की कहानी भी कह सकते हैं।

संदर्भ स्रोत

1. पराशर, पंकज : पुनर्वाचन, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) 2012, पृ. 90
2. श्रीवास्तव परमानंद : कहानी की रचना प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ.– 212
3. सिंह काशीनाथ : कहनी उपखान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ. 29
4. वही, पृ. 33
5. वही, पृ. 53
6. वही, पृ. 82
7. वही, पृ. 97
8. सिंह, यदुनाथ : समकालीन कहानी के रचनात्मक आशय, ओम प्रकाशन, दिल्ली, 1987, पृ. 95
9. सिंह, काशीनाथ : काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, ग्यारहवाँ संस्करण–2015, पृ. 151
10. सिंह, कामेश्वर प्रसाद : चौपाल (अर्द्धवार्षिकी) एटा, अंक–1, 2014, पृ. 51
11. सिंह, काशीनाथ : 'महुआ चरित', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 14
12. वही, पृ. 12